

अथि गिरि नंदिनि नंदित - मेदिनि, निरव विनादिनि नंदनु ते
गिरिवर - विंध्य - शिरोद्ये - निवासिनि विष्णु - विलासिनि विष्णुनु ते ।
अभवति हे शितिकंठ - कुंडुपिनि भूरि कुंडुबिनि भूरिकृते
जय जय हे महिषासुरमहिनि रम्यकपदिनि शौलासुते ॥३॥ (३)

सुशवर दुर्धरधिनि दुर्मुख मषिनि हर्षरे
त्रिपुवन पोषिनि शंक र तोषिनि किष्किष - मोषिनि विष्णुनु ते ।
दुर्ज - निशेषि नि क्षिति - सत - रोषिनि दुर्मुख - मोदिनि सिद्धसुते
जय जय हे महिषासुरमहिनि रम्यकपदिनि शौलासुते ॥३॥ (३)

अथि शत - श्रुड - विश्रुडित - रुड - विश्रुडित - श्रुड - गजाधिपते
रिपुगज - गंड - विवर्ण - चंड - पशकम - शौक - व्याधिपे ।

निज-भुज-दंड निपातित - चंद्र - विभातित - मुंड - भटाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥३॥ (३)

धनु रंग संग - रण - क्षण - संग - परिस्फुरंग - नदकटके
कनक - पिपंग पुष्पक - निपंग - रसद - भट रंगहतावदुके।
कृत - चतुरंग बल क्षिति रंग - घटद - बहु रंग - रटद - वदुके
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥४॥ (३)

जय - जय - जय - जय - जय - शब्द - पर - स्मृति - तत्पर - विश्वबुते
इन - इन - झिझित - झंकृत - नूपुर - सिजित - मोहित - भूतपते।
नटित नटार्थ - नटी - नट - नायक - नाटित - नाट्य - सुमानसे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥५॥ (३)

अपि सुमनसु - सुमनसु - सुमनसु - सुमनसु - सुमनोहर - कंसिद्यु
श्रित - रजनी - रजनी - रजनी - रजनी - रजनीकर - वक्र - व्रते ।
सुनयन - विअमर - अमर - अमर - अमर - अमराधिपते
जय जय हे महि पाशुरमर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥६॥ (३)

सहित - मठार्णव - मल्ल - मल्लिक - मल्लिक - मल्लिक - मल्लिक
विरचित - पल्लिक - पल्लिक - मल्लिक - मल्लिक - मल्लिक - वर्णवृते
सितकंत - फुल्ल - स मुल्लिसि तारुण - तल्लज - पल्लव - मल्लिके
जय जय हे महि पाशुरमर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते ॥७॥ (३)

कमल - कलामल - कोमल - कान्ति - कला - कलिकामल - भीललत
सकल - विलास - कला निलय - क्रम - केलि - चलत् - कलहंस कुले ।

अलि - कुल - संकुल - कवलये - मंडल - मौलि - मलह - वकुलालिकुले
जय जय हे महिषासुरमहिलि त्रयंकपटिनि शैल सुते ॥ ८ ॥ (३)